पाठ - संगतकार

शब्दार्थ-व्याख्या

1. **मुख्य गायक के चट्टान ..... मिलाता आया है प्राचीन काल से।**

शब्दार्थ –

- **मुख्य गायक** – मुख्य संगीतकार
- **चट्टान** – पत्थर का बहुत बड़ा और विशाल खंड
- **भारी स्वर** – गंभीर आवाज
- **कमजोर** – दुर्बल, निर्बल, अशक्त, शक्तिहीन, ढीला
- **शिष्य** – छात्र
- **गरज** – बहुत गंभीर या घोर शब्द
- **गूँज** – भौरों के गुंजार करने का शब्द, गुंजार, कलरव, प्रतिध्वनि, गुंजार
- **प्राचीन काल** – प्राचीन समय या बहुत पहले बिता हुआ समय

प्रसंग – इन पंक्तियों में कवि ने गायन में मुख्य गायक का साथ देने वाले संगतकार की भूमिका के महत्व का प्रतिपादन किया है। यह कविता मुख्य संगीतकार का साथ देने वाले संगतकार की भूमिका के ईद–गिर्द घूमती है।

व्याख्या – उपरोक्त पंक्तियों में कवि कहते हैं कि जब मुख्य गायक किसी संगीत सभा में अपना कोई गीत प्रस्तुत कर रहा होता है तो उसकी भारी व गंभीर आवाज के साथ ही हमें संगतकार (मुख्य गायक का साथ देने वाला सह गायक) की आवाज सुनाई देती है। वह आवाज हल्की – हल्की मगर सुंदर और मधुर सुनाई देती हैं। कवि उस संगतकार की आवाज सुन कर अंदाजा लगा रहे हैं कि यह संगतकार मुख्य गायक का छोटा भाई भी हो सकता है या मुख्य गायक का कोई शिष्य भी हो सकता है या फिर संगीत सीखने के लिए पैदल चलकर मुख्य गायक के पास आने वाला कोई उनका दूर का रिश्तेदार भी हो सकता है। और सबसे खास बात यह हैं कि यह संगतकार जब से गायक ने गाना शुरू किया है तब से उसका साथ देना आया है। यानि शुरू से ही वह संगतकार मुख्य गायक की आवाज में अपनी आवाज मिलाकर उसके संगीत को और प्रभावशाली बनाता आया है।

सरलार्थ – इन पंक्तियों के माध्यम से कवि मुख्य संगीतकार का साथ देने वाले संगतकार की ओर लोगो का ध्यान लाना चाहते हैं। क्योंकि जितना योगदान किसी गायन में मुख्य संगीतकार का होता है उतना ही योगदान संगतकार का भी होता है। उसकी आवाज भले ही धीमे आती हो, परन्तु उसकी आवाज में भी मधुरता और सुंदरता होती है। कवि अनुमान लगाते हैं कि वह संगीतकार का कोई भाई या शिष्य या कोई रिश्तेदार भी सकता है क्योंकि वह संगीतकार के साथ बहुत समय पहले से ही संगतकार की भूमिका निभा रहा है।

egyanarchive

2. **गायक जब अंतरे की …….. जब वह नौसिखिया था**

शब्दार्थ –

- **अंतरा** – मुखड़े को छोड़कर गीत का शेष भाग, गीत की टेक से अगली पंक्तियाँ, गीत के चरण
- **जटिल** – उलझा हुआ, कठिन, दुर्बोध, जो आसानी से सुलझ न सके
- **तान** – संगीत में स्वरों का कलात्मक विस्तार
- **सरगम** – सात सुरों का समूह, स्वर-ग्राम, सप्तक, सातों सुरों के उतार–चढ़ाव या आरोह–अवरोह का क्रम, किसी गीत या ताल में लगने वाले स्वरों का उच्चारण
- **लाँघकर** – पार करना
- **अनहद** – अनाहत या सीमातीत
- **स्थायी** – हमेशा बना रहने वाला, सदा स्थित रहने वाला, नष्ट न होने वाला
- **समेटना** – बिखरी या फैली हुई वस्तु को इकट्ठा करना, बटोरना
- **नौसिखिया** – जिसने कोई काम हाल ही में सीखा हो, जो काम में निपुण न हो, अनाड़ी, अदक्ष

प्रसंग – कविता के इस अंश में कवि संगतकार के उस हुनर के बारे में वर्णन कर रहा है जब मुख्य संगीतकार अपनी ही धुन में खो जाता है और अपने सुरों से भटकने लग जाता है, तब संगतकार ही अपनी खूबियों का प्रदर्शन करते हुए सब कुछ संभाल लेता है।

व्याख्या – उपरोक्त पंक्तियों में कवि कहते हैं कि कभी – कभी मुख्य गायक किसी गाने का अंतरा गाने में इतना मगन (तल्लीन) हो जाता हैं कि वह अपने सुरों से ही भटक जाता हैं। यानि असली सुरों को ही भूल जाता हैं। और अपने ही गीत या ताल में लगने वाले स्वरों के उच्चारण को भूल जाता है। वह संगीत के उस मोड़ पर आ जाता है जहाँ अंत निकट हो। ऐसी स्थिति में संगतकार, जो हमेशा मुख्य सुरों को पकड़े रहता है। वही उस समय सही सरगम को दुबारा पकड़ने में मुख्य गायक की मदद कर उसे उस विकट स्थिति से बाहर लाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि संगतकार हमेशा मूल स्वरों को ही दोहराता रहता हैं। जब मुख्य गायक गीत गाते हुए सुरों की दुनिया में खो जाता हैं और अंतरे के सुर – तान की बारीकियों में उलझकर बिखरने लगता हैं व मुख्य सुरों को भूल जाता हैं । तब वह संगतकार के गाने को सुनकर वापस मुख्य सुर से जुड़ जाता हैं। अर्थात संगतकार, सुर से भटके हुए मुख्य गायक को वापस सुर पकड़ने में मदद करता हैं। कवि आगे कहते हैं कि उस समय ऐसा लगता है मानो जैसे कि वह संगतकार मुख्य गायक का पीछे छूटा हुआ सामान संमेटते हुए उसके साथ आगे बढ़ रहा है। उस समय उस मुख्य गायक को अपना बचपन याद आ जाता है जब वह नया – नया गाना सीखता था या नौसिखिया था। और उसका गुरु उसको सुरों से भटकने न दे कर सही सुरों पर बने रहने में उसकी मदद करता था।

सरलार्थ – प्रस्तुत पंक्तियों से हमें ज्ञात होता है कि संगतकार की भूमिका एक मुख्य संगीतकार के लिए क्या है। संगतकार हमेशा मुख्य गायक के लिए एक मार्गदर्शक का कार्य करता है। जब – जब भी गायक अपने संगीत की मुख्य लय से भटक जाता है तो संगतकार ही मुख्य सुरों तक वापिस आने में उसकी सहायता करता है।

egyanarchive

3. तारसप्तक में जब बैठने ..... गाया जा चुका राग

शब्दार्थ –

- **तारसप्तक** – संगीत शास्त्र से संबंधित एक विधा, हिंदी साहित्य में प्रयोगवादी कवियों द्वारा संपादित काव्य – ग्रंथ
- **प्रेरणा** – प्रोत्साहन-परक भाव-विचार (इंस्पिरेशन)
- **उत्साह** – उमंग, जोश, उछाह, हौसला
- **ढाँढस बँधता** – तसल्ली देना
- **राग** – किसी ख़ास धुन में बैठाये हुए स्वर का ढाँचा, प्रेम, अनुराग

प्रसंग – उपरोक्त काव्यांश में कवि संगतकार की उन और अधिक बातों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं जिनके बारे में हम अनजान हैं। कवि बताना चाहते हैं कि संगतकार हर मुश्किल घडी में मुख्य गायक का साथ देता है और उसे हर मुसीबत से बाहर निकालता है।

व्याख्या – उपरोक्त पंक्तियों में कवि कहते हैं कि जब कभी मुख्य गायक संगीत शास्त्र से संबंधित विधा का प्रयोग करके ऊंचे स्वर में गाता है तो उसका गला बैठने लगता है। उससे सुर सँभलते नहीं हैं। तब गायक को ऐसा लगने लगता है जैसे कि अब उससे आगे गाया नहीं जाएगा। उसके भीतर निराशा छाने लगती है। उसका मनोबल खत्म होने लगता है। उसकी आवाज कांपने लगती हैं जिससे उसके मन की निराशा व हताशा प्रकट होने लगती है। उस समय मुख्य गायक का हौसला बढ़ाने वाला व उसके अंदर उत्साह जगाने वाला संगतकार का मधुर स्वर सुनाई देता हैं। उस सुंदर आवाज को सुनकर मुख्य गायक फिर नए जोश से गाने लगता हैं। कवि आगे कहते हैं कि कभी – कभी संगतकार मुख्य गायक को यह बताने के लिए भी उसके स्वर में अपना स्वर मिलाता है कि वह अकेला नहीं है। कोई है जो उसका साथ हर वक्त देता है। और यह भी बताने के लिए कि जो राग या गाना एक बार गाया जा चुका है। उसे फिर से दोबारा गाया जा सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि कभी – कभी मुख्य गायक अपने द्वारा गायी गई पंक्तियों को दोहराना नहीं चाहता जिस वजह से वह अपनी लय से भटकने लगता है, तभी मुख्य गायक का साथ देने संगतकार आ जाता है और मुख्य गायक को हौसला देता है कि जब – जब भी वह डगमगाएगा उसका साथ देने के लिए वह हमेशा उसके साथ है और जो पंक्तियाँ मुख्य गायक गा चूका है उन पंक्तियों को भी दोहराया जा सकता है।

सरलार्थ – प्रस्तुत पंक्तियों से हमें ज्ञात होता है कि संगतकार की भूमिका मुख्य गायक के जीवन में अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होती है। क्योंकि जब – जब भी मुख्य गायक अपना गीत गाते हुए कोई गलती करता है या कही कुछ भूल जाता है तो संगतकार उसकी गलतियों को छुपाने के लिए उसके द्वारा गाई गई पंक्तियों को दोहराता है। इससे मुख्य गायक को सँभलने का मौका मिल जाता है।

4. और उसकी आवाज में ..... समझा जाना चाहिए

शब्दार्थ –

- **हिचक** – हिचकने की क्रिया, संकोच, झिझक

egyanarchive

- **विफलता** – विफल होने की अवस्था या भाव, असफलता
- **मनुष्यता** – इनसानियत, मानवता, दया, बुद्धि

प्रसंग – इस काव्यांश में कवि, संगतकार जो हमेशा मुख्य गायक के पीछे गाता है, उसकी इस स्थिति को कम न समझने को कहते हैं कि भले ही संगतकार मुख्य गायक के हमेशा पीछे ही गाता है। परन्तु उसका इस तरह पीछे गाना कोई संगतकार की कमजोरी या असफलता नही माननी चाहिए बल्कि उसका सम्मान करना चाहिए।

व्याख्या – उपरोक्त पंक्तियों में कवि कहते हैं कि जब भी संगतकार मुख्य गायक के स्वर में अपना स्वर मिलता है यानि उसके साथ गाना गाता है तो उसकी आवाज में एक संकोच साफ सुनाई देता है। और उसकी हमेशा यही कोशिश रहती है कि उसकी आवाज मुख्य गायक की आवाज से धीमी रहे। अर्थात उसका स्वर भूल कर भी मुख्य गायक के स्वर से ऊँचा न हो जाए इसका ध्यान वह बहुत अच्छे से रखता है। लेकिन हमें इसे संगतकार की कमजोरी या असफलता नही माननी चाहिए क्योंकि वह मुख्य गायक के प्रति अपना सम्मान प्रकट करने के लिए ऐसा करता है। कहने का तात्पर्य यह है कि अपना स्वर ऊँचा कर वह मुख्य गायक के सम्मान को ठेस नही पहुँचाना चाहता है। यह उसका मानवीय गुण हैं।

सरलार्थ – उपर्युक्त पंक्तियों का भाव यह है कि संगतकार जान-बूझकर अपने स्वर को मुख्य गायक के स्वर से ऊँचा नहीं होने देते हैं। यह संगतकार द्वारा अपनी प्रतिभा का त्याग है जो योग्यता और सामर्थ्य होने पर भी मुख्य गायक की सफलता में बाधक नहीं बनता है और मानवता का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करता है।

प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1. संगतकार के माध्यम से कवि किस प्रकार के व्यक्तियों की ओर संकेत करना चाह रहा है?

उत्तर :- संगतकार के माध्यम से कवि उन व्यक्तियों की ओर संकेत करना चाह रहा है जो दूसरों की सफलता की पृष्ठभूमि में रहकर अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं। योग्य एवं प्रतिभा सम्पन्न होने पर भी वे स्वयं को महत्व न देकर मुख्य व्यक्ति या मुख्य कलाकार के महत्व को बढ़ाने में ही सहायक के रूप में अपनी भूमिका निभाना अपना धर्म समझते हैं।

egyanarchive

प्रश्न 2. संगतकार जैसे व्यक्ति संगीत के अलावा और किन-किन क्षेत्रों में दिखाई देते हैं?

उत्तर :- संगतकार जैसे व्यक्ति संगीत के अलावा बड़े-बड़े नेताओं, अभिनेताओं और संत-महात्माओं के साथ भी इसी प्रकार का सहयोग करते दिखाई देते हैं। ये सभी सहायक के रूप में कार्य करते हुए अपने-अपने नेताओं, अभिनेताओं और संत-महात्माओं का महत्व बढ़ाने में लगे रहते हैं।

प्रश्न 3. संगतकार किन-किन रूपों में मुख्य गायक-गायिकाओं की मदद करते हैं?

उत्तर : संगतकार निम्नलिखित रूपों में मुख्य गायक-गायिकाओं की मदद करते हैं

1. संगतकार मुख्य गायक-गायिकाओं के स्वर में अपना स्वर मिलाकर उनके स्वर को बल प्रदान करते हैं।

2. मुख्य गायक-गायिकाओं के कहीं गहरे चले जाने पर उनके मुखड़े को पकड़कर वे उन्हें वापस मूल स्वर पर ले आते हैं।
3. वे मुख्य गायक-गायिकाओं की थमी हुई, टूटती-बिखरती आवाज को बल देकर उनका सहयोग करते हैं। उन्हें अकेला नहीं पड़ने देते हैं।

प्रश्न 4. भाव स्पष्ट कीजिए -

और उसकी आवाज़ में जो एक हिचक साफ़ सुनाई देती है
या अपने स्वर को ऊँचा न उठाने की जो कोशिश है
उसे विफलता नहीं
उसकी मनुष्यता समझा जाना चाहिए।

उत्तर :-

भाव - संगतकार हर-संभव प्रयास करता है कि उसका स्वर मुख्य गायक के स्वर से ऊँचा और अधिक प्रखर न हो जाए। इसलिए उसके स्वर में थोड़ी ही हिचक समायी रहती है। उसकी इस हिचक को उसकी विफलता नहीं माननी चाहिए, बल्कि यह तो उसकी मनुष्यता की ही सूचक है। वह मुख्य गायक को आगे बढ़ाता है तथा योग्य एवं समर्थ होते हुए भी स्वयं को पीछे रखता है।

प्रश्न 5. किसी भी क्षेत्र में प्रसिद्धि पाने वाले लोगों को अनेक लोग तरह-तरह से अपना योगदान देते हैं। कोई एक उदाहरण देकर इस कथन पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर :- किसी भी क्षेत्र में प्रसिद्धि पाने वाले लोगों को अनेक लोग तरह-तरह से अपना योगदान देते हैं। वह सभी के योगदान से अपने जीवन की ऊँचाइयों को छूकर प्रसिद्धि को पा लेता है। उदाहरण के लिए आज भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान महेन्द्रसिंह धोनी को जो सफलता एवं यश मिल रहा है, उसमें उसके प्रशिक्षक का, टीम के कोच और सभी खिलाड़ियों का योगदान माना जाता है। उसकी टीम के खिलाड़ियों ने यदि तन-मन से उसका सहयोग नहीं किया होता, तो वह अकेले क्या कर सकता था। टीम के खिलाड़ी अच्छा प्रदर्शन करते हैं, टीम विजयी होती है, तो यश या नाम कप्तान का होता है जबकि योगदान सभी सदस्यों का रहता है।

प्रश्न 6. कभी-कभी तारसप्तक की ऊँचाई पर पहुँचकर मुख्य गायक का स्वर बिखरता नजर आता है उस समय संगतकार उसे बिखरने से बचा लेता है। इस कथन के आलोक में संगतकार की विशेष भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- जब मुख्य गायक अपना गीत गाते-गाते अपने स्वर को ऊँचाई पर ले जाता है तो ऐसी स्थिति में कभी-कभी उसका स्वर बैठने और बिखरने लगता है। उसका उत्साह मंद पड़ने लगता है। उसकी रुचि और शक्ति समाप्त सी होने लगती है। तब संगतकार ही वह व्यक्ति होता है जो संकटमोचक बनकर गायक को उस स्थिति से उबार लेता है और उसके स्वर में

egyanarchive

अपना स्वर मिलाकर उसके स्वर को बिखरने से बचा लेता है। इस प्रकार उस समय वह अपनी विशिष्ट भूमिका का निर्वहन करता है।

प्रश्न 7. सफलता के चरम शिखर पर पहुँचने के दौरान यदि व्यक्ति लड़खड़ाता है तब उसे सहयोगी किस तरह सँभालते हैं?
उत्तर :- सफलता के चरम शिखर पर पहुँचने के दौरान कई बार व्यक्ति लड़खड़ा जाता है। यदि इस स्थिति में उसे कोई सहारा मिल जाए तो वह व्यक्ति अपने में सँभल जाता है, अन्यथा वह गिर जाता है। उसको इस लड़खड़ाती स्थिति से बचाने के लिए उसके सहयोगी ही अपनी अहम भूमिका निभाते हैं। वे उसको ढाँढस बंधाते हैं। उसको उसकी शक्ति और क्षमताओं से परिचित कराते हैं। उसके उत्साह का वर्धन करते हैं। उसे आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं।

रचना और अभिव्यक्ति -
प्रश्न 8. कल्पना कीजिए कि आपको किसी संगीत या नृत्य समारोह का कार्यक्रम प्रस्तुत करना है लेकिन आपके सहयोगी कलाकार किसी कारणवश नहीं पहुँच पाएँ
(क) ऐसे में अपनी स्थिति का वर्णन कीजिए।
(ख) ऐसी परिस्थिति का आप कैसे सामना करेंगे?
उत्तर :
(क) ऐसी स्थिति में घबरा जाना सहज-स्वाभाविक होता है, क्योंकि सहयोगी कलाकारों के बिना कार्यक्रम को उचित ढंग से प्रस्तुत करना सम्भव नहीं हो पाता है। अतः ऐसे वातावरण में हम अपनी स्थिति आयोजकों और दर्शकों के बीच स्पष्ट कर देंगे। न पहुंचने वाले सहयोगी कलाकारों की व्यस्तता या अन्य कारणों का उल्लेख कर हम उनको सन्तुष्ट कर देंगे।

(ख) ऐसी स्थिति का सामना हम अपने वाक्-चातुर्य से परिस्थितियों को भांपकर करेंगे। इस सम्बन्ध में हम आयोजकों और दर्शकों से क्षमा याचना तो अपनी ही, लेकिन उन्हें अपनी प्रतिभा के बल पर निराश होकर नहीं जाने देंगे। यह ठीक है कि बिना सहयोगी कलाकारों के रोचक कार्यक्रम की प्रस्तुति नहीं की जा सकती, लेकिन प्रतिभा के बल पर उनका मनोरंजन तो अकेले भी किया जा सकता है।

प्रश्न 9. आपके विद्यालय में मनाये जाने वाले सांस्कृतिक समारोह में मंच के पीछे काम करने वाले सहयोगियों की भूमिका पर एक अनुच्छेद लिखिए।
उत्तर :- विद्यालय में जो सांस्कृतिक समारोह आयोजित किया जाता है उसमें मंच पर उतरने वाले कलाकारों की प्रस्तुति सफल बनाने में अन्य सहयोगियों की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण होती है। उनके सहयोग के बिना मंच का दृश्य अभिनीत नहीं हो सकता। वे सभी प्रकार की आवश्यक वस्तुओं को जुटाते हैं। मंच का निर्माण और उसकी साज-सज्जा करते हैं। कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार करते हैं।

egyanarchive

कलाकारों की पोशाकों की व्यवस्था करते हैं। समारोह के समय संगीत, प्रकाश और ध्वनि आदि में काम आने वाले उपकरणों की मंच के पीछे से ठीक समय पर व्यवस्था देते हैं। उस समय की व्यवस्था ही नाटक को सफल बनाने में सहायक होती है। मंच पर माँग के अनुसार कुर्सी आदि रखने व पुरस्कार आदि की व्यवस्था करने में सहयोगियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

प्रश्न 10. किसी भी क्षेत्र में संगतकार की पंक्ति वाले लोग प्रतिभावान होते हुए भी मुख्य या शीर्ष स्थान पर क्यों नहीं पहुँच पाते होंगे?

उत्तर :- किसी भी क्षेत्र में संगतकार जैसे सहयोगी व्यक्ति प्रतिभावान होते हुए भी मुख्य या शीर्ष स्थान पर इसलिए नहीं पहुंच पाते हैं, क्योंकि एक तो उन्हें उचित अवसर प्राप्त नहीं हो पाता, जिससे वे अपनी प्रतिभा का दूसरों के बीच प्रदर्शन कर सकें और उसकी वाहवाही लूट सकें। मुख्य कलाकार को सफलता दिलाना ही उनका लक्ष्य रहता है, उनके मन में शीर्ष स्थान पर पहुँचने की चाह नहीं जगती और जगती भी है तो उन्हें उनकी मनुष्यता ऐसा करने नहीं देती।

पाठेतर सक्रियता -

प्रश्न - आप फ़िल्में तो देखते ही होंगे। अपनी पसन्द की किसी एक फ़िल्म के आधार पर लिखिए कि उस फ़िल्म की सफलता में अभिनय करने वाले कलाकारों के अतिरिक्त और किन-किन लोगों का योगदान रहा।

उत्तर :- फिल्म की सफलता में अभिनय करने वाले कलाकारों के अतिरिक्त इन लोगों का भी योगदान होता है. जैसे- स्क्रिप्ट लेखक का, संवाद लेखक का, कैमरामैन का, संगीतकार का, गायक और गायिका का, निर्देशक का, पोशाक निर्धारक का, एडीटर का, डंबिंग करने वाले आदि का।

प्रश्न - आपके विद्यालय में किसी प्रसिद्ध गायिका की गीत प्रस्तुति का आयोजन है -

(क) इस संबंध में सूचना पट्ट के लिए एक नोटिस तैयार कीजिए।

(ख) गायिका व उसके संगतकारों का परिचय देने के लिए आलेख (स्क्रिप्ट) तैयार कीजिए।

उत्तर :

सूचना-पट्ट के लिए सूचना–

सूचना

दिनांक: 13 अप्रैल 2025

विषय: लता मंगेशकर जी की गीत प्रस्तुति का आयोजन

सूचित किया जाता है कि हमारे विद्यालय में भारत की प्रसिद्ध सुर साम्राज्ञी **लता मंगेशकर** जी के गीतों की एक विशेष प्रस्तुति का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर लता मंगेशकर जी के प्रसिद्ध गीतों को सुनने का सौभाग्य हमें मिलेगा। उनके साथ उनके संगतकार भी प्रस्तुति देंगे।

egyanarchive

दिनांक: 18 अप्रैल 2025

समय: प्रातः 10:00 बजे से

स्थान: विद्यालय प्रांगण (मुख्य सभागार)

सभी छात्र-छात्राओं से अनुरोध है कि समय पर उपस्थित होकर इस संगीतमय कार्यक्रम का आनंद लें।

संयोजक

(सांस्कृतिक समिति)

(ख) गायिका और संगतकारों का परिचय देने के लिए आलेख (स्क्रिप्ट)

आलेख (स्क्रिप्ट) - मंच संचालन के लिए

"सुप्रभात आदरणीय प्रधानाचार्य महोदय, शिक्षकगण तथा मेरे प्यारे सहपाठियों।

आज का दिन हमारे विद्यालय के लिए अत्यंत गौरवपूर्ण है, क्योंकि आज हम सब भारत की स्वर कोकिला, सुरों की रानी, पद्म विभूषण से सम्मानित **लता मंगेशकर** जी की गीत प्रस्तुति का साक्षी बनने जा रहे हैं।

लता मंगेशकर जी का नाम भारतीय संगीत इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। इन्होंने हजारों फिल्मों में गाने गाए हैं और अपनी मधुर आवाज से करोड़ों दिलों पर राज किया है। इनकी आवाज में भक्ति, प्रेम, देशभक्ति और विरह के सभी भाव बखूबी झलकते हैं।

आज के कार्यक्रम में लता दीदी का साथ देने के लिए उनके साथ उनके प्रमुख संगतकार भी उपस्थित हैं:

तबले पर — **पंडित शंकरलाल मिश्रा**

हारमोनियम पर — **श्रीमान राजीव वर्मा**

वायलिन पर — **श्रीमती सुरभि मेहता**

यह संगतकार अपने-अपने क्षेत्र के सिद्धहस्त कलाकार हैं, जो आज के कार्यक्रम में संगीत का जादू बिखेरेंगे।

आइए, हम सब मिलकर तालियों की गड़गड़ाहट से लता जी और उनके संगतकारों का स्वागत करें।"

egyanarchive